दैनिक लोकजीवन

74वां स्वाधीनता दिवस : कोरोना बाधित आजादी

74वां स्वाधीनता दिवस ऐसे माहौल में मनाया गया जा रहा है जिसमें लोक अनलॉक की आंख मिचौली चल रही है। देश ही नहीं दुनिया किंकर्तव्यी मूढ़ हो रही है। हताशा, बेचैनी और भय के बीच उम्मीद के साथ कदम बढ़ा रही है विपदा के इस दौर में 'आत्मनिर्भर भारत' का मंत्र देशवासियों को प्रेरित कर रहा है कि 15 अगस्त 1947 को भारत माता सदियों की गुलामी की जंजीरों से तो मुक्त हो गई। लेकिन न केवल हमें आजादी का अहसास करवाया बल्कि यह चुनौती भी दी कि कृषि, शिक्षा, रक्षा, चिकित्सा सहित सभी क्षेत्रों में हम जितने आत्मनिर्भर होते जायेंगे उतने ही सशक्त और बलशाली भी हो पायेंगे, क्योंकि शांति के लिए ताकत की जरूरत होती है ताकत के बिना शांति नहीं रह सकती और आजादी को बचाने के लिए भी ताकतवर होना जरूरी है। हमारी निर्भरता जब तक दूसरों पर रहेंगी हम उससे दबते रहेंगे, जितने ही आत्मनिर्भर होते जायेंगे स्वतः ही आजादी का आनंद भी आने लगेगा।

निसंदेह आज का दिन उन अमर शहीदों, असंख्य स्वतंत्रता सैनानियों, देशभक्त युवाओं और गांधी, नेहरू, तिलक, भगतसिंह, राजगुरू, नेताजी सुभाष बोस, जैसे अग्रीण महापुरूषों को नमन करने का है जिनके त्याग और बलिदान से ही गांधी जी के अहिंसा रूपी हथियार ने बिना खड्ग तलवार के देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करवाया और पं. नेहरू ने प्रधानमंत्री के रूप में स्वतंत्र भारत की यात्रा आरंभ की।

अगस्त 2020 इसलिए भी विशेष महत्व का बन गया जब पांच शताब्दी से विवादित मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम की जन्म स्थली पर 9 नवम्बर, 2019 के सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुरूप राष्ट्रीय आस्था केन्द्र के रूप में श्रीराम मंदिर निर्माण का श्री गणेश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कर कमलों से सम्पन्न भूमि पूजन से आरंभ हो गया और आध्यात्मिक इतिहास का नया अध्याय लिखा गया।

कोविड-19 अर्थात कोरोना महामारी ने वर्ष के आरंभ से ही रंग दिखाना आरंभ कर दिया, नतीजन देश में मार्च के तीसरे सप्ताह से ही लॉक डाउन अर्थात तालाबंदी लागू कर दी जो चार चरणों में कोई ढाई महिने तक जारी रही। जो जहां था वहीं रह गया बच्चे बूढ़ों के लिए विशेष सावधानी के साथ आमजन घरों ही कैद होकर रह गया, सड़क, रेल व हवाई यातायात ठप्प कर दिया व्यापार, व्यवसाय बंद, स्कूल कॉलेज, पढाई व परीक्षाएं स्थगित, आवाजाही मंदिर, मस्जिद, धार्मिक स्थल, बंद, सभा समारोह,शादी विवाह सहित सभी गतिविधियां प्रतिबंधित हो गई, रोजगार थम गये। युवाओं को नौकरियां चली गई, पढ़ाई चली गई। प्रवासी मजदूरों को मजबूरन घर लौटना पड़ा, मनरेगा और खेती बाड़ी संकट मोचन बन गई। क्योंकि कोरोना वायरस से बचने का, संक्रमण की चेन तोड़ने अथवा बचाव के लिए लॉकडाउन की सर्वोत्तम उपाय माना गया। देश की जनता ने कष्ट उठाकर भी कोरोना को हराने के लिए सरकारों के हर कदम का समर्थन किया।

गरीबों, मजदूरों, असहायों को भूख से बचाने के लिए समाज व सरकार की ओर से सराहनीय प्रयास हुए लेकिन जीवन के साथ जीविका बचाने के लिए अनलॉक करना पड़ा। अनलॉक के तीसरे चरण के बाद छूट और प्रतिबंधों का मिलाजुला क्रम चल रहा है संक्रमितों की संख्या लाखों में पहुंच गई, लेकिन कमाना भी मजबूरी और मास्क तथा दो गज की दूरी भी जरूरी। ऐसे में आजादी खुद ही सवाल करने लगी कि एक वायरस ने देश ही नहीं दुनिया की आजादी को प्रतिबंधित कर दिया संक्रमण के डर से कोई नजदीक नहीं आ सकता, पढ़ाई, प्रार्थना नहीं कर सकता, सफर शर्तों के साथ, काम-काज शर्तों के साथ यातायात और सार्वजनिक परिवहन आरंभ हुआ तो शर्तों के साथ तो आजादी किसे कितनी मिली हुई है। आजादी के नाम पर लापरवाही बरतने वाले संक्रमण के शिकार हो रहे और लोगों को भी संक्रमित कर रहे हैं जो गंभीर चुनौती बनी हुई है ये कैसी आजादी है।

"जिसको खबर नहीं, उसे जोश खरोश है।
जो पा गया राज, वो गुम है खामोश है।।"

लॉकडाउन से ज्यादा दुखद स्थिति अनलॉक के बाद बनती जा रही है। जब उद्योगों में उत्पादन नहीं, बाजारों में व्यापार नहीं, विद्यालयों में प्रवेश नहीं, आस्था केन्द्रों में अनुमति नहीं।

कोरोना महामारी ने राजनीति और लोकतंत्र को भी जकड़ लिया विधानसभाओं व संसद का सत्र बुलाना तय होने से पहले कोविड गाइड लाइन की पालना सुनिश्चित करनी जरूरी है। कानून कहता है निकायों व विधानसभा, लोकसभा, राज्य सभा के चुनाव तय कार्यकाल की अवधिनुरूप सम्पन्न करवाये जाय। लेकिन यह सवाल भी साथ ही खड़ा है कि चुनाव होंगे तो पर्याप्त दूरी व मास्क की अनिवार्यता का किस तरह पालन हो पायेगा। निर्वाचन आयोग नये दिशा-निर्देशों के साथ चुनाव सम्पन्न करवाया चाहेगा।

कोरोना काल में बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाने का विकल्प खोजा गया लेकिन सच्चाई यह है कि न बच्चों के अभिभावकों की उपकरण खरीदने की हैसियत और न ही बच्चों में इतनी पारंगतता वे तो कक्षा में भी आमने-सामने पढ़ने में अक्षम होते हैं कैसे ऑनलाइन पढ़ लेंगे। सुप्रीम कोर्ट ने मंदिरों के आभासी दर्शन या ऑनलाइन दर्शन पर आपत्ती की कि आभासी दर्शन संतुष्ट नहीं कर सकते, फिर जब अन्य गतिविधियां सभी जारी की जा रही है तब उपासना पर ही क्यों रोक जारी रखी जा रही है।

हालांकि कोरोना वायरस किसी को माफ नहीं करता और किसी को नहीं पहचानता तभी तो देश के पूर्व राष्ट्रपति, देश के गृहमंत्री तक संक्रमित हो चुके है, मंत्री मुख्यमंत्री हो या डॉक्टर, नर्सिंगकर्मी वायरस कहीं भी किसी को भी माफ नहीं करता। इसलिए आजादी की धुन में कोरोना को आमंत्रण तो नहीं दे रहे हैं।

'जो कल थे वे आज नहीं होंगे, जो आज हैं वे कल नहीं होंगे।
होने न होने का क्रम इसी तरह चलता रहेगा,
हम हैं, हम रहेंगे, यह भ्रम भी सदा पलता रहेगा'

निश्चय ही अच्छे दिन भी आयेंगे, कोरोना हारेगा, भारत सहित दुनिया के वैज्ञानिक वैक्सीन और दवा बनाने में जुटे हैं। प्रयोग का दौर जारी है। रूस ने तो सफलता पाने का दावा भी करते हुए पहला टीका राष्ट्रपति की पुत्री को लगाकर शुरूआत की है। 74वें स्वाधीनता दिवस पर कामना करते हैं कि महामारी पर नियंत्रण पाकर खुशहाली व समृद्धि के यात्रा पथ पर देश पुनः गतिशील हो, अर्थव्यवस्था पटरी पर लौटे, युवाओं, किसानों, मजदूरों, व्यापारियों, उद्योगपतियों, पेशेवरों के मुखमंडल पर सम्पन्नता की खुशी नजर आये। स्वतंत्रता को सम्पन्नता व आत्मनिर्भता का सहारा मिले। इन्हीं मंगल कामना के साथ लोकजीवन परिवार, देशवासियों, पाठकों, विज्ञापनदाताओं, शुभचिंतकों, सहयोगियों को हार्दिक बधाई देता है।

जय हिन्द, जय भारत।
स्वतंत्रता दिवस की मंगल कामना।
कैलाश त्रिवेदी

मजबूत बनने की चाह में और कमजोर हो गये पायलट

लोकजीवन न्यूज नेटवर्क, जयपुर

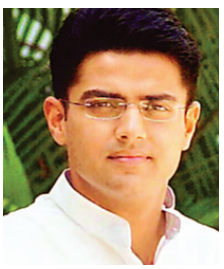

राजस्थान में कांग्रेस की अशोक गहलोत सरकार के संकट के बादल अब छंटते हुए दिखाई दे रहे हैं। अशोक गहलोत एवं सचिन पायलट के आपसी मतभेद एवं मनभेद से उपजे राजनीतिक द्वंद्व ने कांग्रेस के केन्द्रीय नेतृत्व की निर्णयहीनता के साथ-साथ उसकी अचिन्तन एवं अपरिपक्व सोच से जुड़े अनेक प्रश्नचिन्ह खड़े कर दिये हैं। राहुल गांधी से मुलाकात एवं प्रियंका गांधी की सूझबूझ से भले ही बागी कांग्रेसी नेता सचिन पायलट की घर वापसी हो जाये, लेकिन इससे सचिन के राजनीतिक कौशल एवं भविष्य पर भी धुंधलके छाये हैं। ऐसा भी नहीं था कि सचिन के पास और कोई रास्ता ही नहीं बचा था लेकिन उन्होंने दूरगामी सोच एवं होश से काम नहीं लिया था, यदि वे ऐसा करते तो भविष्य की राजनीति में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका बनती। इस पूरे राजनैतिक घटनाक्रम का एक बड़ा सच यही सामने आया है कि पायलट अभी राजनीति में कच्चे खिलाड़ी हैं। वह उसी पेड़ की डाल को काटने चले थे जिस पर खुद बैठे थे। यहां एक बार फिर कद्दावर नेता के रूप में गहलोत उभरे हैं। गहलोत समय के अनुसार राजनीतिक पांसा फेंकने के सिद्धहस्त कलाकार साबित हुए और विपरीत परिस्थितियों में भी उनके कदम नहीं डगमगाये। आखिर गहलोत जैसे नेता को क्यों नहीं कांग्रेस के केन्द्रीय नेतृत्व की कमान सौंपी जाती?

राजस्थान के इस संकट की जड़ में केवल मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और उप मुख्यमंत्री पद से हटाए गए सचिन पायलट के बीच के मतभेद ही सामने नहीं आए हैं, बल्कि कांग्रेस नेतृत्व की निर्णयहीनता एवं नेतृत्व की अपरिपक्वता भी सामने आयी है। हर बार की तरह इस बार भी पार्टी का नेतृत्व परिस्थितियों एवं हालातों को दोषी ठहरा कर इस सबका ठीकरा भाजपा के सिर पर फोड़ता नजर आया। सोचनीय प्रश्न है कि आखिर पार्टी प्रतिकूलताओं से लड़ने के लिये ईमानदार प्रयत्न कब करेगी? कब वह निर्णय लेने की पात्रता को विकसित करेंगी? इसी निर्णयहीनता के चलते दोनों नेताओं के मतभेद इस हद तक बड़े और गतिरोध जरूरत से ज्यादा लंबा खिंचा। कांग्रेस नेतृत्व किस कदर निर्णयहीनता से ग्रस्त है, इसका प्रमाण राजस्थान में इतने लम्बे समय तक अनिर्णय की स्थिति का बना रहना है।

इससे भी बड़ा निर्णयहीनता का उदाहरण यह है कि एक सौ चालीस साल पुराना राजनीतिक दल अपना अध्यक्ष तक नहीं चुन पा रहा है। सोनिया गांधी को अंतरिम अध्यक्ष बने एक वर्ष हो गया है और फिर भी इसका फैसला नहीं हो पाया है कि अगला अध्यक्ष कौन बनेगा और कबड एक साल बाद भी कांग्रेस के अगले अध्यक्ष के बारे में कोई फैसला न हो पाना यही बताता है कि पार्टी में निर्णयहीनता किस कदर हावी है। वास्तव में, कांग्रेस में संकट केवल निर्णयहीनता का ही नहीं है, बल्कि नेतृत्व का भी है। पार्टी के लगातार कमजोर होते जाने में कांग्रेस नेतृत्व की खोटी नीयत, अपरिपक्व सोच, पारिवारिक मोह, राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय नीतियों एवं मुद्दों का नितांत अभाव आदि प्रमुख कारण है। यदि किसी दल में नेतृत्व का टोटा हो, नीयत में कपट हो, नेतृत्व क्षमता क्षीण हो, निर्णायक क्षमता पर ग्रहण लगा हो एवं नीतियों में भारी घालमेल हो तो स्वाभाविक रूप से राजस्थान जैसे संकटों के उभरने का सिलसिला बना ही रहेगा। एक बड़ा प्रश्न यह भी है कि एक लोकतांत्रिक राष्ट्र की जनता कब तक एक प्रमुख राजनीतिक दल के पारिवारिक परिवेश को मान्यता देती रहेगी? कांग्रेस में नेतृत्व का मापदंड केवल नेहरू-गांधी परिवार की क्षमता तक कब तक सीमित रहेगा? किसी प्रतिभावान, क्षमतावान एवं योग्य नेता में पार्टी नेतृत्व की प्रचंड संभावना दिखती है तो उसे क्यों कमजोर कर दिया जाता है? क्यों उसके पर कतर दिये जाते हैं? क्यों उसके सामने पार्टी छोड़कर जाने की स्थितियां खड़ी कर दी जाती हैं? इन त्रासद एवं विकट स्थितियों में पार्टी कब और कैसे मजबूत होगी? कांग्रेस को लोगों के विश्वास का उपभोक्ता नहीं अपितु संरक्षक बनना चाहिए।

कांग्रेस के सशक्त एवं कद्दावर नेता माने जाने वाले माधवराव सिंधिया एवं राजेश पायलट के साथ क्या हुआ, सर्वविदित है। दीवार पर लिखी इबारत की भांति पार्टी के कड़वे सत्य का प्रकटीकरण है कि पार्टी में जो भी नेहरू-गांधी परिवार के बाहर का व्यक्ति नेतृत्व के लिये सामने आयेगा, उसका हश्र यही होगा। लेकिन प्रश्न है कि इस तरह आम-जनता के बीच कैसे अपनी स्वीकार्यता कायम रखी जा सकती है? इससे तो पार्टी का दिन-ब-दिन क्षरण ही होगा। इन्हीं स्थितियों का परिणाम है कि पार्टी लगातार कमजोर ही नहीं हो रही है, अनेक अवसरों पर हास्यास्पद एवं बिखरावमूलक त्रासद स्थितियों का कारण भी बन रही है। ज्योतिरादित्य सिंधिया का कांग्रेस छोड़ना एवं सचिन पायलट की नाराजगी इसके उदाहरण हैं।

राजस्थान में सचिन पायलट ने जिन ऊंचे सपनों के साथ अपने विद्रोह को प्रकट किया, उस तरह की राजनीतिक परिपक्वता एवं जिजीविषा का उनमें सर्वथा अभाव रहा। इससे ऐसा प्रतीत हुआ मानो बिना पूरी तैयारी एवं आकलन के गलत समय पर गलत निर्णय लेकर सचिन ने अपनी छवि को धुंधलाया है। जिनके खुद के पांव जमीन पर नहीं वे युद्ध की धमकी दे रहे हैं, वाली स्थिति ने सचिन को अपने लोगों के बीच भी कमजोर बना दिया है। यही कारण है कि कानून की विभिन्न धाराओं की तलवार जब सचिन पायलट के विद्रोही गुट पर लटकनी शुरू हुई तो इन्हें अपनी सदस्यता बरकरार रखने के लिए राहुल गांधी की शरण में जाने के अलावा अन्य कोई रास्ता नहीं सुझा। सचिन के साथ केवल 18 विधायक हैं जो मौजूदा कांग्रेस विधानमंडलीय दल की शक्ति के छठे भाग के बराबर हैं, साथ ही इतने विधायकों के साथ सचिन भाजपा के विधायकों के साथ मिल कर यदि मध्य प्रदेश जैसे घटनाक्रम को दोहराते तब भी गहलोत सरकार के स्थायित्व पर कोई असर नहीं पड़ता। इसलिए खुद को कमजोर एवं डांवाडोल स्थिति में पाकर उन्हें पुनः अपने घर में वापस जाने की सूझी, परन्तु पिछले डेढ़ महीने में सचिन ने जो करतब किये हैं उससे राज्य में सचिन की, प्रदेश कांग्रेस पार्टी एवं केन्द्रीय नेतृत्व की छवि को भारी धक्का भी लगा है। विशेषतः इस सम्पूर्ण घटनाक्रम में सर्वाधिक नुकसान सचिन का हुआ है, उनकी छवि अर्श से फर्श पर आ गयी है जिसकी भरपाई निकट भविष्य में होती हुई दिखाई नहीं देती। यह तो उनके लिये कांग्रेस में रहने भर का जुगाड़ है। इससे न तो सचिन और न ही कांग्रेस पार्टी की राजनीतिक जमीन राजस्थान में मजबूत हुई है। सचिन जैसे उभरते हुए युवा राजनीतिज्ञ व्यक्तित्व के लिये जरूरी है कि वे पद की श्रेष्ठता और दायित्व की ईमानदारी को व्यक्तिगत अहम् से ऊपर समझने की प्रवृत्ति को विकसित कर मर्यादित व्यवहार करना सीखें अन्यथा शतरंज की इस बिसात में यदि प्यादा वजीर को पीट ले तो आश्चर्य नहीं। बहुत से लोग काफी समय तक दवा के स्थान पर बीमारी ढोना पसन्द करते हैं पर क्या वे जीते जी नष्ट नहीं हो जाते? सचिन को ही सोचना था कि वे एक नये राजनीतिक मार्ग पर बड़े या लगातार दवा के नाम पर बीमारी ढोते रहें? भले ही वे राजस्थान में विपक्षी पार्टी भाजपा के लिए किसी काम के साबित नहीं हुए हों, लेकिन इन अंधेरों के बीच वे कोई नया विकल्प तलाशते तो संभव था देश में एक नया राजनीतिक नेतृत्व उभरता, युवा राजनीति को नया आकाश मिलता।

Bhilwara Spinners Limited
CIN: L17111S RJ 1980 PCL008217
Regd. Off.: 26, Industrial Area, Bhilwara - 311 001 (Rajasthan)

UNAUDITED FINANCIAL RESULTS FOR THE QUARTER ENDED 30TH JUNE, 2020 (Rs. in Lac)

Particulars	Quarter Ended	Year Ended
	30.06.2020	31.03.2020
	Unaudited	Audited
Total income from Operation (net)	104.07	687.27
Other Income	16.40	83.24
Exceptional Items	-	462.14
Net Profit (+)/Loss(-) from Ordinary Activities	15.13	17.43
Net Profit (+)/Loss(-) after Exceptional Income & Tax	11.35	384.35
Paid-up equity share capital (Face Value of the Share Rs.10/- per share)	676	676
Reserve excluding Revaluation Reserves as per balance sheet of previous accounting year	-	1508.16
Earning per share from Ordinary Activities	0.22	0.26
Earning per share After Exceptional income & Tax	0.17	5.69

Notes:
The above is an extract of the detailed formet of financial result for the quarter/ year ended 30th June 2020 filed with the stock Exchange under regulation 33 of SEBI (Listing and other Discloser Requirments) Regulations 2015.The full formet of the financial results are avalable on the stock Exchanges websites www.bseindia.com.

By order of the Board
for Bhilwara Spinners Limited
Ashok Kumar Kothari
Director
DIN-00132801

Date : 13th August, 2020
Place : Bhilwara (Rajasthan)

RANJAN POLYSTERS LIMITED
Regd. Office : 11-12TH, K.M., STONE, CHITTORGARH ROAD, GUWARDI, BHILWARA-311001, RAJASTHAN
CIN: L24302RJ1990PLC005560, Website: www.ranjanpolysters.com, Email: ranjanpoly@gmail.com
EXTRACT OF UNAUDITED FINANCIAL RESULT FOR THE QUARTER ENDED 30TH JUNE, 2020

EXTRACT OF UNAUDITED FINANCIAL RESULT FOR THE QUARTER ENDED 30TH JUNE, 2020

(Rs. in Lacs)

S. No.	Particular	Quarter Ended		Financial Year Ended Audited
		30.06.2020	30.06.2019	31.03.2020
		Unaudited	Not subject to review/audit	
1	Total Income from Operations (Net)	362.28	1228.3	4739.62
2	Net Profit / (Loss) for the period (Before Tax, Exceptional and/or Extraordinary items)	7.57	31.15	37.66
3	Net Profit / (Loss) for the period before tax (after Exceptional and/or Extraordinary items)	7.57	31.15	37.66
4	Net Profit / (Loss) for the period after tax (after Exceptional and/or Extraordinary items)	6.73	23.48	34.70
5	Total Comprehensive Income for the period [Comprising Profit / (Loss) for the period (after tax) and Other Comprehensive Income (after tax)]	10.60	23.48	50.16
6	Equity Share Capital (Face Value Rs. 10/- each)	300.09	300.09	300.09
7	Reserve excluding Revaluation Reserve	676.26	642.76	665.66
8	Earnings Per Share (of ₹ 10 /- each) not annualised.			
	Basic :	0.22	0.78	1.16
	Diluted :	0.22	0.78	1.16

Notes:
1. The above audited financial results have been reviewed and recommend by the Audit Committee and approved by the Board of Directors of the Company at their respective meetings held on August 13, 2020.
2. The above is an extract of the detailed formet of Quarterly Financial Results filed with the Stock Exchanges under Regulation 33 of the SEBI (Listing and Other Disclosure Requirements) Regulations, 2015. The full format of the Quarterly ended Financial Results is available on the Stock Exchange website(s) at **www.msei.in** and the Company's website at **www.ranjanpolysters.com.**

Place : Bhilwara
Dated : 13.08.2020

For & on behalf of the Board
Ranjan Polysters Limited
(Saket Parikh)
(Executive Director)
DIN :00105444